खेलों की सामाजिक भूमिका

प्रभुत्ववादी प्रवृत्ति को रोकने में कैसे मदद करता है खेल?



पीटर ग्रे



खेलों की सामाजिक भूमिका

प्रभुत्ववादी प्रवृत्ति को रोकने में
कैसे मदद करता है खेल?

पीटर ग्रे

(अनुवाद एवं सम्पादन: आशुतोष उपाध्याय)

बाल विज्ञान खोजशाला समिति

बेरीनाग, उत्तराखण्ड

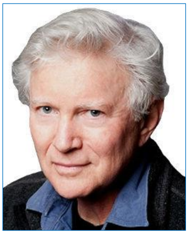
खेलों की सामाजिक भूमिका

लेखक: पीटर ग्रे

बाल विज्ञान खोजशाला समिति, सत्यनिकेतन, बेरीनाग (पिथौरागढ़), उत्तराखण्ड
द्वारा निशुल्क वितरण हेतु प्रकाशित ई बुक: 2025

सभी चित्र इंटरनेट से साभार

लेखक



प्रो. पीटर ग्रे

पीटर ग्रे, पीएच.डी. अमेरिका के बोस्टन कॉलेज में रिसर्च प्रोफ़ेसर हैं और दो बेहद लोकप्रिय पुस्तकों – फ्री टू लर्न और साइकोलॉजी – के लेखक हैं। उन्हें तुलनात्मक विकास, उद्विकास, विकास एवं शैक्षिक मनोविज्ञान में शोध का विषद अनुभव है। प्रो. ग्रे ने कोलंबिया विश्वविद्यालय से स्नातक शिक्षा पूरी करने के बाद रॉकफिलर विश्वविद्यालय से जीवविज्ञान में पीएच.डी. की डिग्री हासिल की। फ़िलहाल वे लम्बे समय से बच्चों की सीखने की सहज वृत्ति और खेलों के शैक्षिक मूल्य पर काम कर रहे हैं। शोध के अलावा उन्हें साइकिल चलाने, नौकायन, स्कीइंग और खेती का शौक़ है।

खेल में छुपी हैं हमारे क़रीबी वानर संबंधियों में आए नारीवादी बदलाव की जड़ें

जैसा कि मैंने पिछले आलेख में बताया था, सामाजिक खेल तभी हो सकता है जब खिलाड़ी अपने भीतर की आक्रामकता को दबा दें। अगर कोई आक्रामक हो जाए तो या तो झगड़ा होगा, जिससे खेल खत्म हो जाएगा, या फिर कमजोर साथी भाग जाएगा – और तब भी खेल खत्म। इसलिए सामाजिक खेल हमेशा सहयोग पर आधारित होता है। कई जानवरों में यह खेल "खेल-लड़ाई" के रूप में दिखता है, जो असली लड़ाई से बिल्कुल उलटा होता है। यहाँ मक़सद साथी को खुश रखना और खेल को लंबे समय तक चलाना होता है, न कि उसे हराना या भगाना। इसलिए खेल के संकेत, दरअसल, अहिंसा और दोस्ती के संकेत होते हैं।



जिन जानवरों की सफलता एक-दूसरे से सहयोग करने पर निर्भर करती है, वे अक्सर खेल का इस्तेमाल दोस्ती और भरोसे के बंधन बनाने में करते हैं। खेल से वे अहिंसा का संकेत देते हैं और यह जाँचते हैं कि सामने वाला सहयोग करने को तैयार है या नहीं। वयस्क खेल ज़्यादातर उन जानवरों में मिलता है जिन्हें शिकार करते समय मिलकर काम करना पड़ता है, जैसे भेड़िये। प्राइमेट्स (बंदर और वानर) में भी वयस्क खेल अक्सर तब होता है जब दो दोस्त लंबे समय बाद मिलते हैं या नर और मादा संभोग से पहले। इस तरह खेल नए रिश्ते बनाने और पुराने रिश्ते फिर से मजबूत करने का काम करता है।

प्राइमेट्स में खेल की भूमिका पर सबसे रोचक शोध बोनोबो पर हुआ है।



हमारे नज़दीकी रिश्तेदार: बोनोबो

अक्सर कहा जाता है कि चिंपैंज़ी हमारे सबसे क़रीबी रिश्तेदार हैं। लेकिन सच यह है कि हम बोनोबो से भी उतने ही क़रीब हैं जितने चिंपैंज़ी से। लगभग 60 लाख साल पहले हमारे पूर्वजों से अलग होकर एक शाखा बनी जिसने आगे चलकर चिंपैंज़ी और बोनोबो को जन्म दिया। करीब 20 लाख साल पहले चिंपैंज़ी और बोनोबो भी आपस में अलग-अलग प्रजातियों में बदल गए। कांगो नदी ने उनके समूहों को बाँट दिया और वे अलग-अलग माहौल में पनपकर दो अलग किस्म के वानर बन गए।

बोनोबो और चिंपैंज़ी शक्ल-सूरत में काफ़ी मिलते-जुलते हैं और उनकी सामाजिक संरचना भी कुछ-कुछ समान है। लेकिन बोनोबो आपस में चिंपैंज़ी की तुलना में कहीं कम आक्रामक हैं। यही वजह है कि वे बड़े और अधिक खुले समूहों में रहते हैं। बोनोबो सभी गैर-मानव वानरों में सबसे ज्यादा सहयोगी और सहनशील हैं। और तो और, वे सबसे ज्यादा खेलने वाले भी हैं – खासतौर से वयस्क होने के बाद।



बोनोबो





चिम्पैंजी

नर बोनोबो भी प्रभुत्व आधारित ढाँचा बनाते हैं, लेकिन इसमें धमकी और हिंसा बहुत कम होती है, जबकि चिंपैंज़ी नरों में यह ज्यादा दिखाई देता है।

कई अध्ययनों से पता चला है कि वयस्क बोनोबो तनाव और झगड़े को रोकने के लिए खेल का सहारा लेते हैं। एक अध्ययन में देखा गया कि कैद में रखे गए बोनोबो भोजन मिलने से पहले सबसे ज्यादा खेलते थे, क्योंकि उस समय समूह में तनाव और प्रतिस्पर्धा चरम पर होती थी। एक और अध्ययन में देखा गया कि जब उन्हें थोड़े समय के लिए तंग जगह में रखा गया, तो वयस्कों के बीच खेल बहुत बढ़ गया। वयस्क चिंपैंज़ी में तनाव कम करने वाला ऐसा खेल लगभग नहीं दिखता।

सबसे बड़ा अंतर यह है कि मादा बोनोबो नरों पर प्रभुत्व रखती हैं। जबकि चिंपैंज़ी में उल्टा होता है – वहाँ नर मादाओं पर हावी रहते हैं और कई बार हिंसक भी हो जाते हैं।



कैसे मादा बोनोबो नरों पर हावी होती हैं

मादा बोनोबो नरों से छोटी और शारीरिक रूप से कमजोर होती हैं, फिर भी वे प्रभुत्व रखती हैं। कैसे? एक-दूसरे का साथ देकर। अगर कोई नर किसी मादा को धमकाता है या उस पर हमला करता है, तो उसकी सहेलियाँ तुरंत मदद को आ जाती हैं और मिलकर उस नर को खदेड़ देती हैं। इसके विपरीत, नर बोनोबो कभी किसी दूसरे नर की मदद नहीं करते जब बात मादा से टकराव की हो।

और भी दिलचस्प यह है कि बोनोबो समाज में मादाएँ अपने जन्म समूह को छोड़कर नए समूह में जाती हैं। यानी ज़्यादातर मादाएँ आपस में न तो रिश्तेदार होती हैं और न ही साथ पली-बढ़ी होती हैं। फिर भी वे गहरी दोस्ती और सहयोगी रिश्ते बना लेती हैं।



तो वे ऐसा कैसे करती हैं? शोध बताता है कि वे यह खेल के ज़रिए करती हैं। एक अध्ययन में पाया गया कि कैद में रखे गए बोनोबो, चिंपैंज़ी की तुलना में, बहुत ज्यादा दोस्ताना और सहयोगी व्यवहार दिखाते हैं और आक्रामकता बहुत कम। दोनों में बच्चों के बीच खेल की मात्रा लगभग बराबर थी, लेकिन वयस्क बोनोबो, वयस्क चिंपैंज़ी की तुलना में बहुत ज्यादा खेलते थे। वयस्क चिंपैंज़ी लगभग कभी भी एक-दूसरे के साथ नहीं खेलते, वे केवल बच्चों के साथ खेलते हैं।

आगे के अध्ययनों से एक और बात सामने आई – वयस्क मादाएँ आपस में बहुत ज्यादा खेलती हैं, जबकि नर बहुत कम। और उनका खेलने का ढंग भी अलग है। मादाएँ "धक्का-मुक्की" व "लोटपोट" वाले खेल खेलती हैं, जिसमें शरीर का संपर्क ज्यादा होता है। नर आपस में बिना संपर्क वाले "समानांतर खेल" खेलते हैं। नर अगर लोटपोट खेलते



भी हैं तो केवल बच्चों या मादाओं के साथ, कभी भी अन्य वयस्क नरों के साथ नहीं। यही "लोटपोट खेल", जिसमें बहुत संपर्क होता है, मादाओं के बीच सहयोगी बंधन बनाता है। जो मादाएँ ऐसे खेल खेलती हैं, वे अक्सर एक-दूसरे को सहलाती हैं और पास बैठती हैं।

संभव है कि नरों का "हैसियत" (status) के प्रति ध्यान इतना होता है कि वे गहरे संपर्क वाले खेल से बचते हैं, क्योंकि उसमें बराबरी माननी पड़ती है। लेकिन मादाएँ, जिन्हें हैसियत की उतनी परवाह नहीं होती, खुलकर खेलती हैं और यही गुण उन्हें नरों का सामना करने में एकजुट करता है। अगर कोई नर मादा को जबरन पकड़ने या उसका खाना छीनने की कोशिश करता है, तो उसकी सहेलियाँ – उसकी खेल-साथिनें – नर पर टूट पड़ती हैं। धीरे-धीरे नरों को यह सीख मिलती है कि मादाओं के आगे झुकना ही बेहतर है।

जैसे कोई आवाज़ कह रही हो: "दुनिया की औरतों, एक हो जाओ (और खेलो)!"



निष्कर्ष

जब हम ऐसे उदाहरण देखते हैं तो मनुष्य समाज की भी याद आती है। कुछ संस्कृतियों में देखा गया है कि जहाँ औरतें एक-दूसरे से गहरे रिश्ते बनाती हैं, वहाँ पुरुष उन पर कम हावी हो पाते हैं। कारण वही है जो बोनोबो में दिखता है – औरतें मिलकर किसी भी अत्याचारी पुरुष का सामना कर लेती हैं। अकसर पुरुष औरतों को एक-दूसरे के खिलाफ़ खड़ाकर ही उन पर प्रभुत्व जमा पाते हैं।

(प्रस्तुति: बाल विज्ञान खोजशाला समिति, बेरीनाग (उत्तराखण्ड)

